

भजन-माला

सुभाष शर्मा शास्त्री जी महाराज

प्रकाशक :

पंचवटी शिवालय

दवलैहड़, (आर० एस० पुरा)

जम्मू तवी-१८११११



भजन-माला

प्रभु प्राप्ति के लिए वैराग्य भक्ति
एवं ज्ञान से परिपूर्ण भजन
इस पुस्तक में पढ़ें
और आनन्द
प्राप्त करें।

सुभाष शर्मा शास्त्री जी महाराज

प्रकाशक :

पंचवटी शिवालय

दवलैहड़, (आर० एस० पुरा) जम्मू तवी-१८११११

मूल्य : ३.००]   [संस्करण : प्रथम, १९८८

प्रकाशकीय

युगप्रेरक परमपूज्य सद्‌गुरुदेव अखण्डमण्डल मार्तण्ड 'युगपुरुष' श्री १०८ स्वामी परमानन्द जी महाराज के शुभ आशीर्वाद से पं० श्री नारायणदास जी के सुपुत्र सुभाष जी शास्त्री जब मधुर स्वर से भजन गाते हैं तो सुनने वाले प्रभु-भक्त आनन्द अनुभव करते हैं। सत्संग में ही कई बार भक्तों को भजन रिकार्ड करते एवं लिखते देखा गया है। समयाभाव के कारण कई भक्त ऐसा नहीं कर पाते थे, अतः लोगों की रुचि एवं माँग को जानते हुए भजनों को कैसेट एवं पुस्तक द्वारा प्रभु-भक्तों के पास पहुँचाने का प्रयास हरि कृपा से अवश्य आपको लाभ देगा। ऐसा हमारा विश्वास है।

अनुभवी सज्जन सुझाव देकर अनुग्रहीत करें जो अगले संस्करणों को अधिक उपयोगी बनाने में सहायक हो सकें।

—मास्टर श्याम लाल शर्मा

पंचवटी शिवालय, दवैलहड़
(आर० एस० पुरा)
जम्मू तवी-१८११११

मंगलाचरणं

ध्यान मूलं गुरोर्मूर्तिः पूजा मूलं गुरु पदम् ।
मन्त्र मूलं गुरोर्वाक्यं मोक्ष मूलं गुरु कृपा ।।
मन्त्र सत्यं पूजा सत्यं सत्यं देव निरञ्जनम् ।
गुरु वाक्यं सदा सत्यं सत्यं एक परम पद्म ।।

ॐ यं ब्रह्मावरुणेन्द्ररुद्रमरुतः स्तुन्वन्तिदिव्यैः स्तवै-
र्वेदैः सांगपदकर्मोपनिषदैर्गायन्ति यं सामगाः ।
ध्यानावस्थित तद्गतेन मनसा पश्यन्ति यं योगिनो,
यस्यान्तं न विदुः सुरासुरगणाः देवाय तस्मै नमः ।।

ॐ कर्पूर गौरं करुणावतारं संसार सारं भुजगेन्द्रहारं ।
सदावसन्तं हृदयारविन्दे भवं भवानी सहितं नमामि ।।

ॐ श्री गणेशाय नमः, ॐ श्री गुरुदेवाय नमः,
ॐ श्री सरस्वतयै नमः, श्री इष्ट देवताभ्यो नमः,
श्री कुल देवताभ्यो नमः, सर्वेभ्यो देवेभ्यो नमः,
सर्वेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो नमः, सर्वेभ्यो सन्त प्रवरेभ्यो नमः,
सर्वेभ्यस्तीर्थेभ्यो नमः ।

ॐ शान्ति ! शान्ति ! शान्ति ! हरि ॐ

प्रार्थना

अब सौंप दिया इस जीवन का, सब भार तुम्हारे हाथों में ।
है जीत तुम्हारे हाथों में, है हार तुम्हारे हाथों में ।।

मेरा निश्चय बस एक यही, एक बार तुम्हें पा जाऊँ मैं ।
अर्पण कर दूँ दुनिया भर का, सब प्यार तुम्हारे हाथों में ।।

जो जग में रहूँ तो ऐसे रहूँ, ज्यों जल में कमल का फूल रहे ।
मेरे गुण दोष समर्पित हों, भगवान तुम्हारे हाथों में ।।

यदि मानुष का मुझे जन्म मिले, तो तब चरणों का पुजारी बनूँ ।
इस पूजक की इक रग रग का, हो तार तुम्हारे हाथों में ।।

जब जब संसार का कैदी बनूँ, निष्काम भाव से कर्म करूँ ।
फिर अन्त समय में प्राण तजूँ, करतार तुम्हारे हाथों में ।।

मुझमें तुझमें बस भेद यही, मैं नर हूँ तुम नारायण हो ।
मैं हूँ संसार के हाथों में, संसार तुम्हारे हाथों में ।।

हम तुमको कभी नहीं भजते, फिर भी तुम हमें नहीं तजते ।
अपकार हमारे हाथों में, उपकार तुम्हारे हाथों में ।।

गुरु देव वन्दना

(तर्ज—दिल के अरमां आँसुओं में बह गये)

मेरे सत्गुरु हम तुम्हारे हो गए…२
तुम हमारे हम तुम्हारे हो गए…मेरे…॥

चन्दा सूरज भी करे सिजिदा जिन्हें…२
ऐसे गुरु के नाम पर हम खो गए मेरे…॥

नजर मेहर की जो तेरी हम पर हुई,…२
भर गया दामन अन्धेरे खो गए मेरे…॥

मिल गया सन्देश तेरा सत्गुरु…२
रही न चिन्ता काम पूरे हो गए मेरे…॥

दिल में तमन्ना थी तेरे इक दर्श की…२
सिमरते ही दर्श तुम्हारे होंगे…
मन में सोचे काम पूरे हो गए मेरे…॥

—०—

भजन

(तर्ज—झुमका गिरा रे बरेली के बाजार में)

जग को छोड़ा रे गुरू जी तेरे प्यार में···२
जग को······

खेल में बचपन बीत गया और नींद में गई जवानी
आया बुढ़ापा भय दिखावे सार न तेरी जानी
कभी बैठकर रोता हूँ मैं करके याद पुरानी
हरि भजन के बिना गुरू जी बीत गई जिन्दगानी
फिर जग······

मोह माया में फँस कर मैंने जग से प्रीति लगाई
देख-देखकर खुश होते हैं माता पिता बहिन भाई
मित्र प्यारे सखा सम्बन्धी करते हैं बड़ाई
सब जग झूठा लगा मुझे जब तुम से नेह लगाई
फिर जग······

पाने आत्म ज्ञान गुरू जी शरण तिहारी आया
आत्मबोध करा दो मुझको स्वयं कर नहीं पाया
ले जिज्ञासा घर से निकला दर-दर पे ठुकराया
मिट गए मेरे मन के शंशय जब तेरा दर्शन पाया
फिर जग······

—०—

गुरु वाणी

(तर्ज—बड़ी मस्तानी है मेरी महबूबा)

पढ़ने से जिसके आये विचार। सुनने से जिसके होये उद्धार

जादू कर जाती है मेरे सत्गुरू की वाणी
मन हर लेती है मेरे सत्गुरू की वाणी…

ऐसी अमृतवाणी, जो ईश्वर का राह बताये
श्रवण मनन निदिध्यासन कर जीव अमर हो जाये
लगा कर ध्यान, ले लो ज्ञान, बन्धन छुड़ाती है
मेरे सत्गुरू……

कब तक भटकते रहोगे विषयों से न तृप्ती मिटेगी
लाख यत्न चाहे कर लो, बिना ज्ञान मुक्ति न मिलेगी
आ के गुरू की शरण, वार दे तन मन, मोक्ष दिलाती है
मेरे सत्गुरु……

प्रभु राम की वाणी ने था तारा का कष्ट मिटाया
श्री कृष्ण की वाणी ने मोह अर्जुन का दूर हटाया
गुरू देव की वाणी ऐंसी वाणी शंशय मिटाती है
मेरे सत्गुरू……

आयो सारे मिलकर, ले सत्संग का सुन्दर नजारा
'सुभाष' क्या-क्या बतलाऊँ ये तो सबको ही देते सहारा
बन जायेगी तकदीर बिगड़ी भाग्य जगाती है…
मेरे…ब्रह्म जनाती है…

—०—

भजन

(तर्ज—हम तो तेरे आशिक हैं सदियों पुराने)

इक रोज सत्गुरु को रोकर पुकारा
मैं जैसा हूँ तैसा भी दास तुम्हारा
मैं जैसा……

बीच मझदार में है नैया, पार कर दो बन के खवैया
डूब जाऊँगा मैं बिन सहारे, उद्धार कर दो, कृपा करैया
तेरे बिना मेरा नहीं अब गुजारा……
मैं जैसा……

तुझे छोड़ किसको सुनाऊँ मेरा रहवर तू, तुझे ही मनाऊँ
पल-पल तेरे गुण गाऊँ मेरा मुर्शिद तू, तुझे ही रिझाऊँ
दिखला दो मुझको है दूर किनारा……
मैं जैसा……

मंजिल तेरी मुझको बुलाये, कैसे आऊँ मैं पाँव डगमगाये
नाम का सहारा मुझको दे दो, मेरे भगवन किनारा…
तूने तो डूबे हुओं को भी तारा
मैं जैसा हूँ तैसा भी दास तुम्हारा…

—०—

कीर्तन

मेरा छोटा-सा संसार, हरि आ जाओ इक बार
तू बन के कृष्ण मुरार, हरि आ जाओ इक बार

राधे कृष्ण श्याम बिहारी
गोपी भल्लव गिरवर धारी
मेरी सुन लो आके पुकार

तूने लाखों के कष्ट मिटाये
मेरी वार क्यो देरी लगाये
मेरा हो जाए उद्धार···

मेरा जीवन तेरे ही हवाले
जिसे अब तक तू ही सम्भाले
अब कर दो भव से पार···

दुनिया के सुख न चाहूँ
तुझ से ही प्रीति लगाऊँ
तेरी हो जाय कृपा अपार···

—o—

भजन

अरे ओ कान्हा, वैरी जमाना, मारेगा ताना
अपना बना के कहीं भूल न जाना।
अरे.........

तूने ऐसी बंसी बजा दी,
दुनिया की हर बात भुला दी।
पनघट पर भी जी जलता है,
तूने ऐसी आग लगा दी...
कान्हां कान्हां जाना जाना...

गोकल की गलियाँ तरसेंगी, मधुवन की कलियाँ तरसेंगी
जिन अँखियों ने तुमको सराहा, तुम बिन वो अँखियाँ तरसेंगी
कान्हां-कान्हां जाना-जाना...अरे...

हमने दिखे थे चाँद सितारे, भूल चुके यमना के किनारे
अब आओगे कब आओगे, निशदिन तड़फे नैन हमारे
कान्हां-कान्हां जाना-जाना—अरे......

—०—

कीर्तन

ये मुरली छुप के बजाई किसने
ये मीठी-मीठी वीणाँ सुनाई किसने

मुरली की तान मेरे कान में पड़ी
यमना किनारे राधे खड़ी - खड़ी
धीरे-धीरे होले-होले दिल को जगाया किसने
ये मुरली......

कोई तो बताओ श्याम कहा गया नी
छोड़ के अकेली राधे चला गया नी
गली-गली देख आई पता न बताया किसने
ये मुरली......

धुन सुनके मुरली की दीवानी हो गई
मिलेया न श्याम उत्यों शाम हो गई
वन-वन ढूँढ़ आई पता न बताया किसने
ये मुरली......

—०—

कीर्तन

नटवर ने वेश बटाया, श्याम चूड़ियाँ बेचन आया

सिर साड़ी धरी और चूड़ी पहरी
गली गली में शोर मचाया
श्याम······

आवाज राधा ने सुनी, आवाज गोपियों ने सुनी
चूड़ी वाले को पास बुलाया
श्याम······

चूड़ी लाल न पहनूंगी, चूड़ी हरी न पहनूंगी
मोहे श्याम रंग है भाया
श्याम······

चूड़ी पाने लगी शर्माने लगी
श्याम धीरे से हाथ दबाया
श्याम······

राधे जान गई, पहिचान गई
मिलने का बहाना बनाया
श्याम······

—०—

कीर्तन

मैं तर जाती मोहना, तेरो भक्ति से
तेरी भक्ति से, हाँ तेरी शक्ति से
मैं तर……

अगर मैं होती चन्दन की लकड़ी
मैं लगती तेरे मात्थे पे…तेरी…
मैं तर……

अगर मैं होती सीपिया का मोती
मैं सजती तेरे मुकटों पे…तेरी
मैं तर……

अगर मैं होती बाँस की पोरी
मैं सजती तेरे होंठों पे…तेरी…
मैं तर……

अगर मैं होती यमुना की मछलियाँ
मैं लगती तेरे चरणों में तेरी
मैं तर जाती मोहना तेरी भक्ति से

—०—

रास लीला

(तर्ज—मिलो न तुम तो हम घबराये)

इक दिन वे भोले भण्डारी बन के नर से नारी
व्रज में आ गए, लगा विन्दिया पहन साड़ी
बन के बृज की नारी वृन्दावन आ गए

पारवती मनाकर हारी, ना माने त्रिपुरारी
वृज में आ गए, वृन्दावन आ गए…इक…

पारवती से बोले, मैं भी चलूँगा तेरे संग में
राधा संग श्याम नाचे, मैं भी नाचूँगा तेरे संग में
रास रचेगी बृज भारी हमें दिखाना सारी…व्रज
इक……

ओ मेरे भोले स्वामी, कैसे ले जाऊँ तुझे रास में
मोहन के सिवा कोई, पुरुष न जाए उस रास में
हँसी करेगी दुनिया सारी, मानो बात हमारी…व्रज
इक……

ऐसा बना दो मुझे, कोई न जाने इस राज को
मैं हूँ सहेली तेरी, ये ही बताना ब्रज राज को
बाँध के जूड़ा, बाँध के साड़ी, बन के ब्रज की नारी
इक……

—०—

मोहन ने देखा जब समझ गए सारी बात को
ऐसी बजाई बंसी सुध-बुध भूली भोलेनाथ को
खुल गया जूड़ा, खुल गई साड़ी, मुस्काय मुरारी
इक……

दीनदयालू जब से हमने सुना तेरा नाम है
ओ मेरे भोले बाबा वृन्दावन भी तो तेरा धाम है
सारा जग है शरण तिहारी रखना लाज हमारी
इक……

हँस के सखी ने कहा बलिहारी जाऊँ इस रूप में
एक दिन तुम्हारे लिए आये थे मोहन इस रूप में
मोहनी रूप बनाया मुरारी, अब है तुम्हारी बारी
इक……

—o—

अगर दिल किसी का दुःखाया न होता,
जमाने में किसी को सताया न होता।
न मिलते तुझे कदम-कदम पे काँटे,
अगर काँटा किसी के चुभाया न होता।
न होता अँधेरा कभी तेरे घर का,
जो दीपक किसी का बुझाया न होता।
न आते तेरी आँख में आज आँसू,
किसी हँसते को रुलाया न होता।

द्रोपदी

(तर्ज—राम तेरी गंगा मैली हो गई)

इक दुखयारी कहे बात ये रोते-रोते
श्याम तेरी द्रोपदी की लाज चली, इक तेरे होते-होते
हरे कृष्णा......

कौरवों की सभा के बीच खड़ी हूँ, कोई न मेरा दर्दी
ओ इक तेरी आस है मेरे मोहन, आगे तेरी मर्जी
पापी खींच रहे साड़ी, मेरी करो रखवारी
कहे अबला बिचारी, अब आयो गिरधारी
देर न लगाओ ये दुष्ट मुझे तड़फाते...श्याम......

पांडव मुझको हार चुके हैं, दुःशासन खींचे साड़ी
भीष्म, द्रोण, कर्ण आदि सब कौरवों के बने हितकारी
सारे जग के आधार, मेरी सुन लो पुकार
होके गरुड़ पे सवार, मेरा कर दो उद्धार
पापी दुर्योधन है हँस रहा खिलखिला के...श्याम......

इतने में प्रभु प्रगट हुए हैं देख भक्तन पर भीड़
दस हजार गज बल घट गयो पर घट्यो न दस गज चीर
खेल प्रभु के न्यारे, हुए हैरान सारे
द्रोपदी एड़ी दिखलाये, सबका भ्रम मिटाये
"सुभाष" भी कहे प्रभु भक्तों की लाज बचाते
श्याम......

—०—

भजन

(तर्ज—तुम्हीं मेरी मन्जिल तुम्हीं मेरी पूजा)

गोविन्द गोपाल कृष्ण मुरारी, तेरी शरण आया हू बाँके बिहारी
बहुत हो चुका अब नहीं ईन्तजारी, तेरी···

जगत का झमेला नहीं रास आया
माया के धन्धों में जीवन गवाया
स्वार्थ में डूबी है दुनिया ये सारी···

पूजा करूँ क्या नहीं ज्ञान पाया
शिकवा न करना ओ मेरे खुदाया
तुम्ही देवता हो मैं हूँ पुजारी···

कहाँ हैं वो सखीयाँ, कहाँ राधा प्यारी
कहाँ गंगा यमना, वो गऊएँ विचारी
हमें भी सुना दो, मुरली तुम्हारी

अरे मन तू काहे को आँसू वहाये
हरिः तो सदा ही तुझ में समाये
तेरे द्वार आया है दास मुरारी

—०—

कीर्तन

(तर्ज—आधा है चन्द्रमा रात आधी)

राधा है श्याम और श्याम राधा
प्रीत हैं अमर सदा ही श्याम राधा, धनश्याम राधा

तान मुरली की कितनी है प्यारी
राह तकती थी सखियाँ बिचारी
रास लीला रची, धूम ऐसी मची
मस्त हो गए सभी देख श्याम राधा

सारे जग का जो पालन हारा
वो है राधा की आँखों का तारा
देख सुन्दर छवि, दिल में मुर्त बसी
जिसने देखा न भूले वो श्याम राधा

वृन्दावन श्याम गऊयें चराये
जमना तट पर वो वंसी वजाये
सुझे उनकी सदा, हो गई मैं फिदा
भुली खुद को भी सुनकर मैं श्याम राधा

—०—

भजन

(तर्ज—मौसम है बहारों का फूलों को खिलना है)

श्रीकृष्ण कन्हैया को हृदय में बसा लेना ।
उस अन्तर्यामी को दिल से न भुला देना ।।

संसार में जो आया उसे इक दिन जाना है ।
जो कर्म किआ जिसने वो ही फल पाना है ।
निष्काम भाव से तुम शुभ कर्म कमा लेना
श्रीकृष्ण…

संसार के सागर में नैया न भटक जाय ।
तूफान तरंगों में फँस कर न अटक जाय ।
विषयों के भंवर से तुम नैया को बचा लेना ।
श्रीकृष्ण…

इस मानव जीवन में कब होश में आओगे
यह सुन्दर अवसर है कब हरि गुण गाओगे
स्वासों की नगद पूँजी यूँ ही न लुटा देना
श्रीकृष्ण…

श्रीकृष्ण ने अर्जुन को ये राज बताया है
जो शरण में आये हैं, उन्हें पार लगाया है
इस जन्म मरण दुःख से छुटकारा पा लेना
श्रीकृष्ण…

—०—

भजन

मत खोलो प्रभुजी मेरा खाता
मेरा जन्म-जन्म का नाता···मेरा जन्म···

कौन जन्म मैंने पाप न कीन्हे
कौन जन्म तूने माफ न कीन्हे
मैं हूँ दीन और तुम हो दाता···
मेरा जन्म···

खाता मेरा काला प्यारे
विषयों से भर डाला प्यारे
मेरे अवगुण बख्शो विधाता
मेरा जन्म···

पूत कपूत भले हो जाये
पिता न अपने प्रण को भुलाये
कभी होती न माता कुमाता
मेरा जनम जन्म का नाता

—०—

भजन

जप ले नाम प्रभु का प्राणी काहे को देरी करे
दो दिन की यह जिन्दगी फिर रात अन्धेरी रे
जप ले···

परम प्रकाशी नाम प्रभु का, मन का मिटाये अन्धेरा
मोह निशा सब मिट जायेगी, सुख का होये सबेरा
राम नाम प्रताप से तेरी जीवन ज्योति जगे···
दो दिन···

राम नाम जपने को तूने मानव तन है पाया
जिसने दिया था जिसके लिए उसी को है बिसराया
ईमानदार है तभी तू इसका सदुपयोग करे···
दो दिन···

तन से सेवा करले जग की मन से जप तू नाम
धन से दान धर्म कर प्राणी, होकर के निष्काम
उसको जान ले प्राणी जो तन मन मति से परे
दो दिन···

सदगुरू की तू शरण में जाकर, अपना सब कुछ वार
मेहर करेंगे तेरे उपर, हो जायगा उद्धार
"सुभाष" जीवन दो दिन का फिर मिले न मिले

—०—

भजन

मधुर सुर बोल रे कागा, मेरा मन राम से लगा
पत्ता इक डाल से टूटा, घड़ा जैसे नार का फूटा
जीव यमदूत ने लूटा, नाता संसार से टूटा
मधुर...

जगत है रैण का सपना, समझले कौन है अपना
निकल जब प्राण जाएगा, निकट कोई न आयेगा
मधुर...

भूल मत देख तन गोरा, जगत में जीवन है थोड़ा
लगेगा आग तन तोरा, जले जैसे घास का डेरा
मधुर...

कुटुम्ब परिवार सुत धारा, उसी दिन होवेगा न्यारा
सभी को स्वार्थ है प्यारा, भजन है सार संसारा
मधुर...

सदा न रहन की देहा, लगा ले राम से नेहा
कहे इक दास जन तोरा लगा दे पार मेरा बेड़ा
मधुर...

—०—

भजन

हरि नाम के हीरे मोती, मैं बिखराऊँ गली गली
ले लो रे कोई राम का प्यारा, अवाज़ लगाऊँ गली गली

दौलत के दीवाने सुनले इक दिन ऐसा आयगा
धन यौवन अरु रूप खजना धरा यहीं रह जायगा
सुन्दर काया माटी होगी, चर्चा होगी गली गली
ले···

मित्र प्यारे सखा सम्बन्धी इक दिन तुझे भुलाएँगे
कल तक अपना जो कहते थे अग्नि में तुझे जलाएँगे
जगत सराय दो दिन का है, अखिर होगी चलो चली
ले···

जिसको अपना कह कर वन्दे तू इतना इतराता है
छोड़ देखे विपत्ति में कोई तेरे साथ न जाता है
दो दिन का ये चमन खिलेगा, मुर्झायेंगी कली-कली
ले···

क्यों करता है मेरी-मेरी तज दे इस अभिमान को
झूठे धन्धे छोड़ दे वन्दे जप ले प्रभु के नाम को
आजाद समय यह फिर न मिलेगा पछताये मल तली-तली
ले···

—०—

भजन

(तर्ज—मेरे गीत अमर कर दो)

संसार के लोगों से आशा न किया करना
जब कोई नहीं अपना सिया राम कहा करना

जीवन के समुन्दर में तूफान भी आते हैं
जो उनको भजते हैं प्रभु आप बचाते हैं
वो आप ही आयेंगे तुम याद किया करना
जब.........

मत भूल अरे बन्दे यह देश बेगाना है
इस दुनिया में आकर वापिस भी जाना है
माया के चक्कर से दिन रात बचा करना
जब.........

यह सोच अरे बन्दे, प्रभु तुमसे दूर नहीं
जब कष्ट हो भक्तों पर प्रभु को मंजूर नहीं
भगवान को आता है भक्तों पे दया करना
जब.........

—०—

भजन

(तर्ज—असां हुन टुर जाना दिन रह गये थोड़े)

लिखनें वाले ने लिख डाले कर्मों के लेख तेरे
कर्म कमा लें वन्देया वे दिन रह गये थोड़े···हरि गुण ले

मुश्किल है मानुष तन पाना,
हीरा जन्म न व्यर्थ गवाना

भूल न जाना हरि गुण गाना,
बिन मंजिल का न राही बन जाना

अंजाने वन इस जग से तू,
रिश्ते नाते जोड़े···कर्म······

जन्म मरण की रीत यही है,
जगत की झूठी प्रीत यही है

हार यही है जीत यही है,
मन जीता तो मीत यही है

मन मन्दिर में मैल भरा तो
कुछ न मिलेगा माला फेरे···कर्म···

—०—

दुनिया के दस्तूर हैं ऐसे,
सारे बन्धन सपनों जैसे
मन को समझा लेते कई ऐसे,
कोई आँसू रोके कैसे
खाली हाथ चला जब जग से
सबसे नाता तोड़े···कर्म······

आज जपूँगा कल जपूँगा,
सुबह जपूँगा, शाम जपूँगा
जिन्दगी पड़ी है तेरा नाम जपूँगा,
"सुभाष" भरोसा नहीं पल का
हरि नाम से मुख क्यों मोड़े···
हरि गुण गा···कर्म कमा···

—०—

धनहीन कहे धनवान सुखी, धनवान कहे सुख राजा को भारी।
राजा कहे महाराजा सुखी, महाराजा कहे सुख इन्द्र को भारी।
इन्द्र कहे ब्रह्मा जी सुखी, ब्रह्मा कहे सुख विष्णो को भारी।
पर तुलसीदास विचारे कहें, हरि नाम बिना सब जीव दुःखारी।

भजन

मुखड़ा क्या देखे दर्पण में,
जब कोई दया धर्म नहीं मन में

कागज की इक नाव बनाई,
छोड़ी गंगा जल में

धर्मी धर्मी पार उतर गये,
पापी डूबे जल में…मुखड़ा…

आम की डाली कोयल राजी,
मछली राजी जल में

साधू रहते वन में राजी
गृहस्थी रहते धन में…मुखड़ा…

कोढ़ी कोढ़ी माया जोड़ी,
जोड़ रखी बर्तन में

यम के दूत पकड़ ले जावें,
रह गई मन की मन में…मुखड़ा…

—o—

भजन

राघव तेरे चरणों की गर धूली ही मिल जाए
हम कर्मों के मारों की तकदीर बदल जाए

सुनते हैं तेरी कृपा दिन रात बरसती है
तेरी दया के सागर से इक बूँद ही मिल जाय
राघव.........

ये मन बड़ा चंचल है कैसे तेरा भजन करूँ
सौ बार ही समझाया, फिर भी यह मचल जाय
राघव.........

मेरी भूल पे मत जाना, मुझे भूल नहीं जाना
मुझे भक्ति का वर दे दो, कली मन की खिल जाय
राघव.........

भव सागर गहरा है, इसे तरना मुश्किल है
मुझे नाम की कश्ती दो जो पार उतर जाय
राघव.........

बस इतनी ही इच्छा है, जब दुनिया से मैं जाऊँ
तेरी सूरत सामने हो, बस दम ही निकल जाय
राघव.........

मैं बूंद तू सागर है, मैं अंश तू अविनाशी
आ जोत से जोत मिला चौरासी जल जाय
राघव.........

—०—

भजन

(तर्ज—तेरी प्यार-प्यारी सूरत को)

इस सुन्दर चोले को पाकर जीवन बर्बाद न कर, प्रभु से डर
इस नर तन चोले को पाकर, जीवन बर्बाद न कर, प्रभु से डर

परम पिता को तू याद कर, शुद्ध आचार विचार कर
इन्द्रियों को बस में करके, मन अपने को मारकर
जप ओं नाम तू सुबह शाम, इसमें प्रमाद न कर
इस............

जैसे कर्म कमायगा, वैसा ही फल पायगा
खिला जो फूल जवानी का इक दिन वो मुर्झायगा
तू दुष्ट जनों से दूर ही रह, इनकी इमदाद न कर
इस............

बिल्डिग आलीशान बना, फर्नीचर से खूब सजा
बिजली का पंखा फिट करके, टी. वी. अच्छा-सा मँगवा
पर अपने सुख के लिए किसी का घर बर्बाद न कर
इस............

सेवा अपना लक्ष्य बना, दीन-दु:खी के कष्ट मिटा
हीरा जन्म अनमोल है प्यारे, मिट्टी में मत इसे मिला
मन को सँभाल ले ऐ वन्दे इसे आजाद न कर
इस............

—o—

भजन

आँखों में हो आँसू और होठों पे हो नाम
क्यों नहीं रीझेंगे मेरे राम, क्यों नहीं मानेंगे मेरे राम
अरे करो भरोसा बन जायेंगे बिगड़े सारे काम··

अपने पापों पर पछताये जब भी तू रो देग
तेरा इक-इक आँसू क्यों न पापों को धो देग
मन मोहन का दर्शन होगा, आहों का ईनाम
क्यों·········

आँसू है वो दर्पण जिसमें रूप राम का वस्ता
ऐसे रोने से हरि मिल जाय तो जानो सस्ता
कितने महँगे भगवन मिलते कितने सस्ते दाम
क्यों·········

रोने पे जग हँसता है पर रो देना आसान नहीं
दीन बन्धु करुणा सिन्ध कर देगें पहिचान सही
भक्त वत्सल और शरणागत को भज ले सुबह
और शाम, क्यों·········

वो आँसू भी क्या आँसू जो जग के लिए बहाय
प्रीतम हित जो पड़े दलीली वो आँसू कहलाय
ऐसे ही इक आँसू पर वो दौड़े आये राम

—०—

भजन

(तर्ज—हाल क्या है दिलों का)

काम मेरा है तड़फूँ दर्श के लिए,
आगे जलबा दिखाना तेरा काम है
काम.........

मैं खिलौना हूँ दाता तेरे हाथ का,
मेरी क्या जिन्दगी मेरी औकात क्या
काम मेरा है बन बन के मिटना प्रभु,
तोड़ना और बनाना तेरा काम है
काम.........

काम मन का है तुझसे ये विनती करें,
काम दाता है खाली झोली भरें
काम मेरा था ज्योति जलाना तेरी,
सोई किस्मत जगाना तेरा काम है
काम.........

जब दिया न किसी ने सहारा मुझे,
होके मजबूर मैंने पुकारा तुझे
मैं हूँ नादाँ मेरा काम है डूबना,
डूबते को बचाना तेरा काम है
काम.........

दर पे तेरे मैं आके गिरा हूँ प्रभु,
अब मुझे लौट जाने की फ़ुर्सत नहीं
काम मेरा था चलना सो मैं चल पड़ा,
आगे रस्ता दिखाना तेरा काम है
काम·········

—०—

भजन

कुछ लेना न देना मगन रहना २
पाँच तत्त्व का बना पिंजरा २
जामें बोले मेरी मैना···कुछ···

तेरा साईं तेरे संग वसत है २
अब तो देख सखी खोल नैना···कुछ······

गहरी नदिया नाव पुरानी २
केवटिया से मिले रहना···कुछ···

कहत कबीर सुनो भई साधो २
गुरु के चरणों में लिपट रहना···कुछ···

—०—

भगवान का सन्देश

(तर्ज—तुम अगर साथ देने का वायदा करो)

मैंने मानव का तन तुझको हीरा दिया,
यदि तू व्यर्थ गँवाय तो मैं क्या करूँ।
वेद शास्त्रों में सभी कुछ बता ही दिया,
यदि समझ न आये तो मैं क्या करूँ।

तू है शुद्ध यद्यपि समझ न सका
द्वैत भ्रम का पर्दा हटा न सका
ब्रह्मवित से अहं ब्रह्म लख न सका
योनि चौरासी जाय तो मैं क्या करूँ।
मैंने........

तू ही सबका अधिष्ठान आधार है
स्वप्नवत तुझमें अध्यस्त संसार है
तू तो निर्मल निरञ्जन निराकार है
भूल अपने को जाय तो मैं क्या करूँ।
मैंने............

कर्म शुभ व अशुभ बाँध सकते नहीं
जान ले मैं द्रष्टा मैं कर्त्ता नहीं
यदि तू योगस्थ हो कर्म करता नहीं
कर्म बन्धन फँसाए तो मैं क्या करूँ।
मैंने............

सर्व धर्मों को तज आजा मेरी शरण
तेरे सब पाप तापों का होगा दहण
यदि माने न तू मेरे अमृत वचन
मुक्ति शाश्वत न पाये तो मैं क्या करूँ।
मैंने............

भक्ति निष्ठा से न कोई साधन किया
ज्ञानी गुरू से न वेदान्त श्रवण किया
तर्क युक्ति से निज को न अनुभव किया
शान्ति अच्युत न पाये तो मैं क्या करूँ।
मैंने............

—०—

जग में जन्मे जब वाल भये, तब एक रही सुधि भोजन की।
तन में तरुणाई जब प्रगटी, तब प्रीति रही तरुणी तन की।
जब वृद्ध भयी तन की तृष्णा, सब लोग कहें सनकी सनकी।
नहिं दान कियो नहिं भक्ति करी, रही अन्त समय मन में मन की।

भजन

निज स्वरूप

मेरा सत चित आनन्द रूप कोई-कोई जाने रे
मेरा…………

द्वैत वचन का मैं हूँ द्रष्टा, मन वाणी का मैं हूँ सृष्टा
मैं हूँ शुद्ध स्वरूप…कोई………

सूर्य चन्द्र विच तेज मेरा है, अग्नि में भी ओज मेरा है
मैं हूँ अनुभव रूप……कोई………

जनम मरण मेरा धर्म नहीं है, पाप पुण्य मेरा कर्म नहीं है
मैं निर्लेप स्वरूप……कोई………

पाँच कोष से मैं हूँ न्यारा, तीन अवस्थों से भी न्यारा
मैं हूँ साक्षी भूप……कोई………

तीन लोक का मैं हूँ स्वामी, घट-घट व्यापक अन्तर्यामी
यूँ माला मे सूत……कोई………

"राजेश्वर" निज रूप पहिचानो, जीव ब्रह्म के भेद को जानो
मैं हूँ ब्रह्म स्वरूप……कोई……

—०—

स्वरूप कीर्तन

शिवोह्ऽम्, शिवोऽहम्, शिवोऽहम्, शिवोऽहम्
वही आत्मा सच्चिदानन्द मैं हूँ, अमर आत्मा……

अखिल विश्व का जो परम आत्मा है
सभी प्राणियों की वही आत्मा है
शिवोऽहम्………

अमर आत्मा है मरणशील काया
सभी प्राणियों के जो भीतर समाया
शिवोऽहम्………

जिसे काटे न शस्त्र न अग्नि जला
बुझाये न पानी न मृत्यु मिटाये……

है तारों सितारों में अलोक जिसका
है चन्दा और सूर्य में आभास जिसका
शिवोऽहम्………

व्यापक है कण-कण में है वास जिसक
नहीं तीनों कालों में है नाश जिसक
शिवोऽहम्………

अजर ओ अमर जिसको वेदों ने गाया
यही ज्ञान अर्जुन को हरि ने सुनाया……

—०—

प्रभु की पार्लियामेण्ट

प्रभु की यही पार्लियामेण्ट,……
हर दिल में होकर हर दिल को, देता है जजमेण्ट
प्रभु………

जैसे कर्म कुकर्म करोगे, भला बुरा फल तुम्हीं भोगोगे
यह जग जेल जीव को जज का आर्डर है अर्जेण्ट…
प्रभु………

काल कोठरी लख चौरासी, जन्म मरण के दुःख की फाँसी
अण्डज, पिण्डज, स्वेदज, उद्भिज लेडी हो या जेण्ट
प्रभु………

जो जिन कड़ी दफों वाला, उसको उसी कैद में डाला
विधि हरिहर जेलर वे सब कुछ करते हैं पेमेण्ट
प्रभु………

बड़ी अदालत मानुष देही, कर्म फैसला हो इसमें ही
अगर पैरवी कर न सके तो लगे नरक में टेण्ट
प्रभु………

फिर थोड़ी भी होश कहीं है, कर्मों का अफसोस नहीं है
वर्कशाप पापों की खोल बन गया जनरल मर्चेण्ट
प्रभु………

घड़ी-घड़ी तन छिजत आई, बाल सफेदी नोटस आई
हाईकोर्ट से सम्मन लाए गवर्मेण्ट सर्वेण्ट
प्रभु.........

हाजिर होना पड़े जरूरी, काम न देगी कोई मजबूरी
अवश्य छोड़ना पड़ेगा इक दिन ये तन रेस्टोरेण्ट
प्रभु.........

पहरेदार पुकार रहे हैं, जाग जाओ ललकार रहे हैं
बता रहे जीवन हितकारी नुस्खा ये पेटेण्ट
प्रभु.........

चोराहे पर सन्त सिपाही, हरी लाल बत्ती दिखलाती
देख न पाते जो खतरे को होता एक्सीडेण्ट
प्रभु.........

सतगुरु एडवोकेट वैरिस्टर, वेद शास्त्र की लाईट बताकर
बरी करा देते फाँसी से सही सेण्ट प्रसेण्ट
प्रभु.........

जो जतेन्द्र गुरु शरण में जाते, जीवन मिसल उन्हें दिखलाते
वो भव बन्धन तोड़ परम पद पाते परमानेण्ट
प्रभु.........

—०—

भजन

ईश्वर तेरी माया, ईश्वर तेरी माया
ऋषि मुनि सब हार गये पर भेद न तेरा पाया
ईश्वर.........

देख के तेरी अद्‌भुत माया, होती बड़ी हैरानी
चींटी से हाथी तक देता, सबको दाना पानी
ईश्वर.........

पत्थर में जो कीड़ा रहता उसको भोजन देता
देता है अनमोल पदार्थ, कोढ़ी तक न लेता
ईश्वर.........

ऊपर को जाति टीठी होत है बड़ा अचम्भा
इतने बड़े आकाश के नीचे खड़ा नहीं कोई खम्भा
ईश्वर.........

चाँद और सूर्य बल्व लगे हैं तेरी जोत के नीचे
किसी समय न आये खराबी हर पर देखे जलते
ईश्वर.........

—०—

भजन

सुन वन्देया वे रब्ब तैत्थों वख ना,
तेरी वेखन वाली अख नां···सुन···

काहनूँ थाह ते फेरना तू वोकरा
विना गुरु तैनूँ ठोकरां ही ठोकरां
विना गुरु तेरे पल्ले पैना कख ना
तेरी······

इक रावण जिहन्ने मौत नूँ भी वन्नेया
मौत वेख के सिहरानेयों भी कम्वेया
काहनूं जोड़े माया ऐवे रख ना
तेरी······

नाम जप ले तू इक भगवान दा
कुज पल्ले वन प्रभु कोल जान दा
सच्ची गल्ल ऐहदे विच कोई शक ना!
तेरी······

—०—

राधा उद्धव संवाद

उद्धव

देख के हाल राधिका का उद्धो बहुत ही रोए।
बारह वर्ष से राधिका जमना तट पर सोए।।

तन तो पिंजरा हो गया, नहीं लहू का नाम।
धन-धन ओ राधिका तुरत किया प्रणाम।।

जीवत कैसे हो राधिका उधो भयो हैरान।
प्राण गति कैसे चले ओ मेरे भगवान।।

बारह वर्ष से राधिका खड़ी है लेकर आस।
उधो मन में सोचता मिटी न मन की प्यास।।

उधो यह नहीं जानता प्रीत में क्या है सार।
राधा के मन में बसे निशदिन कृष्ण मुरार।।

जंगल में योगी फिरे माया करे खुयार।
प्रेम बिना हरि न मिले करलो यत्न हजार।।

प्रेम शिखर की बात है बुझे बिरला कोय।
जो बूझे वो अमर है जन्म मरण नहीं होय।।

प्रेम कभी मरता नहीं, प्रेम ही आत्मा राम।
क्या जाने वो प्रेम को, सुमिरे न जो नाम।।

राधा

उधो को देखा जबी बोले मन्द मुस्काए ।
सखा हो तुम तो श्याम के क्या सन्देशा लाए ।।

आवन की प्रभु क्या कहे कैसे हैं घनश्याम ।
पलक न बिसरत है प्रभु पल-पल सुमिरूं नाम ।।

निद्रा तो बिलकुल उड़ी रही न भूख प्यास ।
उद्धव एक ही भूख है श्याम मिलन की आस ।।

उद्धव

उधो बोला राधिके न काया को रोल ।
ऐ काया फिर न मिले समय बहुत अनमोल ।।

राधा क्यों भई बावरी, करो इष्ट का ध्यान ।
योग बिना मिलते नहीं निराकार भगवान ।।

धर्म कर्म का भेद मैं तुझको दियौ समझाय ।
बिना कर्म ऐ राधिका मन का नहीं उपाय ।।

जब तक मन वश में नहीं, युक्ति न पूरी होय ।
युक्त बिना ऐ राधिका मनमुक्त कभी न होय ।।

भक्ति रस ना जो चखे रखे मुक्ति की आस ।
भक्ति रस पीये बिना मिटे न मन की प्यास ।।

राधा

उधो प्रीत की रीत है बिरला जाने कोय।
प्रीत की रीत वो जानता जो सब कुछ अपना खोय ।।

प्रेम न उधो कर्म है नाहिं योग की बात।
प्रेम तो मन की बात है अन्दर करे मिलाप ।।

निराकार साकार में नहीं भेद की बात।
दोनों में प्रीतम बिना नहीं दूसरी जात ।।

मन अपने को जोड़ दे श्रीकृष्ण भगवान।
देख नजारा प्रेम का उधो बात ले मान ।।

मन तो रंग गयो श्याम संग ऐसा होयो मौन।
जा उधो घर अपने योग कमावे कौन ।।

नदिया सागर से मिली सागर ही बन जाय।
राधा तो कृष्ण भई कृष्ण में रही समाय ।।

बात सुनी उधो जबी मिटा सकल अभिमान।
धन-धन ओ राधिका धन-धन कृष्ण भगवान ।।

—०—

भगवत स्वरूप

प्रीतम तो हर जगह है किस विद मैं कह सुनाऊँ।
वाणी से जो परे है कैसे मैं गीत गाऊँ ।।

हम तो तड़प रहे थे प्रीतम कहाँ छुपा है
आँखों में जुस्तजु थी, दिल खाक हो चुका है
लेकिन अजब तमाशा, अब राज क्या बताऊँ
वाणी······

अन्दर को रुख किया जब मुरली बजा रहा था
देखा जो ध्यान करके कोई गीत गा रहा था
तन मन को छोड़ भागा, प्यारा नजर जो आया
मैं देख ही रहा था इकदम वो मुस्कराया
मैंने कहा ओ जालिम कितना सितम किया है
कैसा रचा यह नाटक हैरान कर दिया है
बोला वो खिलखिलाकर, मैं तो सदा यहीं था
दुई का जोड़ पर्दा तूने चुका दिया था
आओ गले मिलें अब, तू खुद ही देख लेगा
किसका कसूर है यह, सब कुछ ही जान लेगा
बिछुड़े मिले जबी हम क्या भेद मैं बताऊँ
वाणी······

बहाता था रोज आँसू जिसके लिए मुरारी
दीदार जब हुआ तो इकदम चढ़ी खुमारी
कितना हसीन था वो सूरत थी प्यारी प्यारी
संगीत बज रहा था हुई मिलन की त्यारी
लेकिन मैं क्या बताऊँ शिकवा करूँ मैं किसका
समझा था गैर जिसको वो तो मैं खुद ही निकला
ज्योति स्वरूप मेरा सतचित आनन्द गाऊँ
वाणी······

प्रीतम मैं खुद ही निकला दो का निशां ही था
मेरी ही सब झलक थी प्यारा मैं आप ही था
मस्ती में झूम उठा शिवोऽहम् किसे सुनाऊँ
प्रीतम······

—०—

भजन

गुरुदेव सहारा बन जाओ, मेरे देव······

घट भीतर घोर अन्धेरा है
प्रभु आके उजाला कर जाओ गुरु······
भव सागर नइया आन पड़ी
प्रभु आके खिवैया बन जाओ गुरुदेव······
युग बीत गये तेरे दर्शन को
प्रभु आके दर्श दिखा जाओ गुरुदेव······

—०—

कव्वाली

हमें दुनिया से क्या मतलब है, यह महफिल राम दिवानों की,
यहाँ आत्म ज्ञान की ज्योत जगे, ये महफिल उन प्रवानों की।

काहे काजी शोर मचाता है, तू राहे मदीने बताता है,
तेरे दिल में है नूर खुदा बाबा, तू बात करे अंजानों की।
हमें दुनिया.........

गर तुझको तलब दिदारे खुदा, कर सजिदा ऐ मुर्शिद शीश झुका
सिर दे कर जो शिकवा न करे, ये दौलत उन मस्तानों की।
हमें दुनिया.........

इस राह में लाखों आते हैं, कोई विरले ही तोड़ निभाते हैं,
इस मंजिल पर वो पहुँचे हैं, जिन्हें होश न अपने वेगानों की।
हमें दुनिया.........

जो इस महफिल में आते हैं, वो राजे हकीकत (मोहब्बत) पाते हैं,
हर सूरत उसकी मूरत है, फिर तलब नहीं बुतखानों की।
हमें दुनिया से क्या मतलब है, यह महफिल है राम दिवानों की॥

—०—

पंजाबी भजन

अवतारी पुरुष

विष्णु ने वेश वटाया, युग पुरुष दे रूप विच आया

गले माला पड़ी हत्थ सोटी फड़ी
सिर सोहना सकारफ सोहाया
युग.........

माता भागां वाली घार, गुरां लित्ता अवतार
धरती ते चनन लाया।...युग......

लखां भक्त तारे, लखां सन्त तारे
ब्रह्म ज्ञान दा डाँका बजाया।...युग...

भक्ति योग तें वेदान्त, एह है गुरा दा सिद्धान्त
सच्चिदानन्द रूप दर्शाया...युग......

एहनां दी शरणी जो आये
ज्ञान अमृत नू पाये
"सुभाष" भेद कोई विरला पाया
युग पुरुष दे रूप विच आया

—o—

भजन

ऐसी कर कृपा गुरुदेव मेरा मन कदे भी डोले नां
रसना विच रस भर दे ऐसा, कौड़ा कदे भी बोले नां
ऐसी.........

एह मन वन उपकारी जावे दुखिया नाल दर्द वं
हत्थ विच फड़ के ज्ञान तराजू, थोड़ा कदे भी तोले
ऐसी.........

अपना दुःख किसे न दस्सा, दुखिया देख कदे न हस्सां
करके दूजे दा नुकसान, कदे सुख अपना टोले नां
ऐसी.........

रखां तेरे ते विश्वास, होवां कदे भी न उ
पल्ले वन्न सबर दा लाल, किधरे चलके खोले
ऐसे.........

जे कर तरस प्रभु तू खावे, ऐसी समझ जीव नू आवे
एह ते हीरा जन्म अनमोल, इस नू खेह विच रोले नां
ऐसी.........

—०—

भजन

जिन्दड़ीये रट लै नी, रट ले प्रभु दा नां
औखे वेले कम्म आवनां तेरे दमां दा भरोसा नां
जिन्दड़ीये........

एह जग बन्देया मुसाफिर खाना कई आये कई टूरगे
माता पिता की धीयां पुत्र, सब साथी मतलब दे
जिन्हां वास्ते पाप कमानैय नई बनने तेरे घर दे
जिन्दड़ीये........

एह शरीर तेरा मिट्टी होना जिस न बड़ा सजौनें
ऐस दी शोभा है नाल गुणां दे ये प्रीत प्रभु नाल पानऐं
टिकट कटा ले राम नाम दी वेख न तू तां ठां
जिन्दड़ीये........

राम जप लै, कृष्ण जप लै, या ब्रह्मा विष्णु महेश
वाहे गुरु सतगुरु, अल्ला, मसीहा सब कटनगे कलेश
"सुभाष" है सब बिच इको ज्योति जै शैरां वाली माँ
जिन्दड़ीये........

—०—

भजन

की मान मान निमानी ऐस जिन्दड़ी दा
साह आवे के न आवे……की मान………

काहनूँ करनैय माया माया साथ न जानी
जे भव जल नूँ लंघना जिन्दड़ीये पढ़ गुराँ दी वाणी
बिन सतगुरु दे तेरी जिन्दड़ीये सार किसे न लैनी
की मान………

हीरा जन्म पाके भी तू खोज न ऐस दी किती ऐ
मोह माया विच पै के दुनिया नाल लगाई प्रीति ऐ
है मतलबी दुनिया सारी, मतलब दी रिश्तेदारी
कर नाम जपन दी तैयारी……की मान………

प्रभु दी कचैरी विच चलदा लिहाज न
ओत्थे कामयाव होना कोई चालवाज न
अग्गे होना ऐ प्यारे, पीछे हटेया न जा
तेरी उम्र बीत दी जावे……की मान………

एहनां ते तू सोच जिन्दड़ीये रव्व तेरे कोलो दूर नई
पर बिना गुरु दे भगति तेरी रव्व भी मंजूर नई
जप नाम गुरां कहना, एत्थे बैठ किसे नई रहना
"सुभाष" मन गुरां दा कहना……की मान……

—०—

भजन

कम नाल रात दिन प्यार जिन्दे प्यारी ऐ
आई केहड़े कम्म एह विचार जिन्दे प्यारी ऐ

घरां वाले कोहलू वाले वैल बांगू जुट गई
प्रभु दी प्रीति तेरे हत्थों किवें छुट गई
माया दा है मेला दिन चार जिन्दे प्यारी ऐ
आई...............

प्रभु दी प्रीत पहले मारे पिछूं तार दी
माया दी प्रीत पहले तार पिछूं मार दी
सार ते असार नूँ नितार जिन्दे प्यारी ऐ
आई...............

जिन्दे तेरा चम किम कम्म नईयों आवनां
अग्ग विच सड़ के एह राख हो जावना
कहनूँ करें चम दा अहंकार जिन्दे प्यारी ऐ
आई...............

हीरा हत्थों दे के कितें कच पल्ले पावी नां
वेला अनमोल, जिन्दे जान के गवाई नां
सुभाष शास्त्री दी पुकार जिन्दे प्यारी ऐ
आई...............

—०—

भजन

बन्दा जग ते परौना दिन चार दा, चंगे कम्म कर बन्दे

शिक्म दे बिच रखेया तैनूं पुठा टंग के
रव्व कोलों आया सी तू दिन चार मंग के
चेता भुल गया पीछले करार दा
चंगे...............

अलड़ जवानी दे ईशारेयां ते लग के
मुर्खा तू पाप कीते दिन रात रंज के
डर रखेया न सच्ची सरकार दा
चंगे...............

हुस्न जवानी तेरी नशेयां ने चूर किता
मुर्खा तू दस्स केहड़ी गल्ल दा गरूर किता
क्यों नहीं मन विच झाँती मार दा
चंगे...............

चंगा करे बन्देया ते चंगा फल पावेगा
भव सागर बिचों पार हो जावेगा
सुभाष काल सिर उते गेहड़े मार दा
वन्दे...............

—o—

भजन

(तर्ज—दिल दा मामला है)

दिल दा मामला है, ऐस दिल ते करो यत्न
हर पासेयों दिल मोड़ के, करो प्रभु दा भजन
दिल दा मामला है, दिल नाल करो कीर्तन
रब्व नूं मुँह दिखोन लई, कुछ ते पल्ले बन
दिल...............

कोई कहन्दा दिल मेरा, विषयां ते लावे डेरा
सतगुरु दा शब्द न आवे, खान नूं पवे हनेरा
सोचा बिच गोते खान्दा, चड़दां नित नवां सवेरा
तोवा अपने वास्ते, करो प्रभु दा भंजन
दिल...............

मेरी इक गल्ल ये मन्ने दिल नूं भगती बिच लोना
हाँ दिल नूं ऐदां समझोना.........

तैनूं अखियां लख करोड़ वारी सच्चे गुरु बिन तेरा कोई
यार नईयो
अजे है वेला तेरे तरन दां, ते वेला गाफली विच
गुजार नईयो

—०—

वेला गवां न बैठी, दिल नूँ भटका न बैठी
दुनियादारी विच पैके दाग लगा न बैठी
अपने गुरु दे वास्ते मैला करो न मन
दिल दा..............

दिल दे असी आखे लग के, रव्व नूँ भुला बैठे हाँ
विषयां विकारां अन्दर, उम्र गवा बैठे हो
मन मुर्खा आखे लग मेरे, मत्त गुरू दी मनो विसार नां
गुरु वाज किसे दी न गति होन्दी, पतशाह दे बिन
संसार नां
भुलेयाँ नूं राह पा देयो, मेरे सच्चे गुरु जन
दिल दा..............

छड़ दे मोह माया बन्दे, हार के तूं पछतोना
तेरे नाल कुज न जाना।

छड़ दे एह हेरा फेरी, यमां ने लेखा लेना
करनै तू मेरी-मेरी दस्स केहड़ी चीज है तेरी
ऐस "मैं" नूं जानन तू तो पहिलां, ऐवे क्यों मारनै मल्लां
दिल दा महिरम बनके कर एहदे नाल दो गल्लाँ
सुभाष आखे एह दिल दे नाल जप लो राधारमन
दिल दा..............

—o—

भजन

मैं मन दे आखे लगेयां, मन मेरे आखे नई लगदा

सत्संग दे विच जरा न वहदां,
घार चल, चल घर ऐ हो कहदा
वाँदर वांग नचदा·····मन·····

मन नूं आखाँ चल सिमरन करीये
मन नूं आखां चल कीर्तन करीये
लख बहाने करदा·····मन·····

मन नूँ आखा चल मन्दिर चलीये
चल के प्रभु दे दर्शन करीये
पेया दलीला करदा·····मन·····

मन नूं कवां चल तीर्थ करीये
चल सन्तां दे दर्शन करीये
गोडे फड़ फड़ बहन्दां·····मन·····

मन नूं आखां चल चुगलियाँ करीये
मन नूं आखां चल निन्देया करी ऐ
कोठे टप टप जान्दां·····मन·····

मन नूं आखा चल लड़न नूं चली ऐ २
बाहमां कुञ्ज कुञ्ज जान्दा··मन··
चंगे छड़ बुरेयां वल जांदा··मन··

—०—

भजन

इक दाया दाया, बचपन खेड़ के गवाया
राम न ध्याया वन्दे राम न ध्याया
दो दाय वीं, घर आई वेगानी धी
तीन दाय त्तीं, जम्मे पुत्र नाले धी
राम न···

चार दाय चाली, वन्दे दे गल बिच पै गई पंजाली
पञ्ज दाय पञ्जाह, वन्दा लग्गा लकों फाह
राम···

छे दाय सट्ठ, वन्दे ने फड़ लई हत्थ च लट्ठ
सत दाय सत्तर, वन्दा हो गया काहतर वाहतर
राम···

अट्ठ दाय अस्सी, मंगे दूध ते मिले लस्सी
नौ दाय नब्बें मुँहों गल्ल न कोई फब्बे
राम···

दस दाय सौ, नां कोई पता ते नां कोई थौह
राम न ध्याया, जिन्दे राम न ध्याया

—०—

भजन

तेरा हर इक कम्म है कमाल या, दुनियाँ वनान वालेया
ढीठा होर न कोइ तेरे नाल या, दुनियाँ वनान वालेया

वदलाँ च दौड़दा ते फूलाँ विच वस्दा
लहरा विच बोलदा ते तारेया च हस्दा
हर पासे पैया जल नूँ बहाल दा
दुनियाँ···

डुबदियाँ बेड़ीयाँनूं कण्डेयाँ ते लाम दा
अग्ग दे फवाकेयाँ चूँ जिन्द नूँ बचाम दा
किते पथरां च कीड़ेयाँ नूँ पाल दा
दुनियां···

घर-घर सूर्य ते चन्न दी आ लोवाने
जग मग लाई सारे जग विच दोवां ने
खवरे किवें एहना दीवेयां नू वाल दा
दुनियाँ···

—०—

भजन

(तर्ज—पण्डित जी मेरे मरने के बाद)

लोकी कहन्दे आजा कृष्णा मैं कवां तू आवीं नां
टके-टके दे ठाकुर बिकदे, अपना मुल्ल पोयावीं नां
लोकी…

माला दे हर मन अन्दर, मन दा मनका लटक रेहा
मन है पापी हत्थ विच माला, मन माया बिच भटक रेहा
इस दुनियां दी झूठी माया, आके तू भुल जावीं नां
लोकी…

पशयां दी थांह बहुते अजकल मुर्गी खाने हो गय ने
अमृत दूध नसीव न हुन्दा सब महखाने हो गय ने
गाऊयाँ दी बेकदरी सुन के अपनी कदर घटाव नां
लोकी…

सिनमें दे बिच भीड़ वथेरी, मन्दिर बिच कोई आन्दा नां
फिल्मी गाने हर कोई गौंदा भजन तेरा कोइ गान्दा नां
वाजी दुनिया साज भी वाजे, मुरली आन बजाबीं नां
लोकी…

रावण हिरणाक्ष है ज्यादा भरत विभीषण थोड़े ने
दुष्ट दुर्जन ते भोगन ऐंशां धर्मी खान्दे कौढ़े ने
सच्चे भक्तां दी तू खातिर रत्ती देर लगावीं नां

—०—

कृष्ण जन्म

(तर्ज—मामला गड़बड़ है)

यद राज कंस दा आया, ओदों पाप धरती ते छाया
ओहने सब ते जुल्म कमाया, तां होया, धर्म नू-खातिरा है।
वसुदेव देवकी जेल दे विच डंकाये ने
पुत्र वे कसूर ही कंस ने मार मुकाये ने
एह जुल्म वेख के मांपे होकां भरदे ने
ओह नां पुत्रां दा लैके छम-छम करदे ने
साडी पेश कोई न जावे, कंस रता तरस ने खावे
धरती भी डोल दी जावे धर्म नूं खतिरा है।
दुःखी देख प्रभु जी आप ही कष्ट उठान लगे
देवकी नूँ निच सुपने दे दर्श दिखोन लगे
तू क्यों रोंदी माता मैं जुल्म मिटावा गा
मैं मार के पापी कंस नू मुक्त करामां गा
मैं पुत्र बन के तेरा कर देवां गा दूर हनेरा
फिर हो जाय सुख दा सवेरा⋯धर्म।
आयो मिलके सारे उस प्रभु दा कीर्तन कर लईये
एस अमृत रूपी वाणी दे घुट भर लईये
ओहदा नां सिमर के पापी भी कई तरदे ने
जेंहडे नां मानदे ओह रगड़े खा-खा मरदे ने
जग चार दिनां दा मेला, तेरे हत्थ न औना-वेला
सुभाष कर ले जन्म सुखेला⋯धर्म⋯

—०—

मक्खन चोरी

(तर्ज—कोका कड़वा दे माईया कोका)

ग्वाल वाल सब ले संग टूरदा सुन लै मात यशोदा
तेरा लाडला नित साडा मक्खन लुटांदा
तेरा लाडला नित साडा मक्खन चुरांदा ॥

पीड़े उत्ते पीड़ा रख मक्खन उतार दा
आप भी खावे नाले गवालां तांही खिलर दा
एह चोरां दा सरदार नी माये, कदे वाज नाआन्दा
तेरा···

बड़ा नट खट माँ तेरा नन्दलाल जी
मटकीयाँ तोड़े नाले करे मन्दा हाल नी
वेखन नूँ ऐ भोला भाला, सब नूँ नाच-नचौन्दा
तेरा···

कर के हिम्मत आसां केहरा एहनू पालेया
कर के प्यार आसां ऐस नूं मना लेया।
गुड़ीया रमजां इस दिया माये सानू भुलेखा पैन्दा
तेरा···

—०—

भजन

तेरी सूरत जो मन बिचवसी है की करां जाके मंदिर शिवालय
खाक होंगे है दर पे तेरे, जान कर दी है तेरे हवाले
तेरी···

तेरे प्रेम दी चुक लई मैं खारी, होका देवां मैं नगरी सारी
प्रेमी दर तेरे ते आये, नईयो खाली मुड़ने वाले
तेरी···

तेरे प्रेम दे बड़े ने तमाशे, मैंनूँ ताने पे देन्दे ने मोपे
रख लाज मेरी हून आपे, कट बन्धन ते तोड़ दे ताले
तेरे···

तेरे प्रेम दी ला लेई मैं महन्दी, ताने दुनिया दे रज-रज मैं सहन्दी
हंस-हंस के मैं एहो कहन्दी, पीने नाम दे भर-भर के प्याले
तेरी···

जीवन नईया पेई डगमग डोले, गहरा सागर ते खावां हिचकोले
भावे तार ते भावे डूबो दें, नैया कर दी है तेरे हवाले
तेरी···

—o—

भजन

प्रभु भावना दा भुखा, भुखा नहीं यो चीज दा
जिहदा होवे मन शुद्ध ओह दे उत्ते रीझ दा

ओहनूँ जग दे पदार्थां दी लोड़ कोई नां
ओह ते पूर्ण भडारी ओहनूं थोड़ कोई नां
ओह ते जग दा है वाली घाटा केहड़ी चीज दा
प्रभु···

झूठे भिलनी दे बेरां दा भी भोग ला ले आ
धन्ने जट दा भी साग टोडा अपना ले आ
कामा वन के ते खेतां बिच बीज-बीज दा
प्रभु···

प्रेम बिच आके भुल जाये जात पात नूँ
अमृत समझ के खाये भगतां दी सोगात नूँ
ओह ते दुनिया दा वाली, घाटा केहड़ी चीज दा
प्रभु···

इक मुट्ठी भर चावल तो राज वारेया
अपने मित्र दा दुःख गया नई सहारेया
दुःख भगतां दे वेख-वेख के पसीज दा
प्रभु···

—०—

सत्संग महिमा

सत्संग अमृत दा प्याला, कोई पीवे कर्मा वाला
रंग चढ़े निराला, जो पीवे होय मतवाला

इस प्याले विच की की सिफ्तां सत्गुरु भेद बतावे
रंग रंग दी रचना विचों, अपना रूप दिखावे

ऐ अमृत दा प्याला ? जे हो, खुल जाये मन दा प्याला
मन बिच होवे उजाला ? जे हो, चढ़ जाये रंग निराला
सत्संग……

इस प्याले नूँ पीवन वाला, देखे नवे नजारे
जन्म मरण दा चक्कर मकावे व्यापक होके सारे
सत्संग……

इस प्याले नूँ जो जन पीवे उस दी शान निराली
नाम खुमारी उतरे नहीं सुरत होय मतवाली
सत्संग……

इस प्याले नू पीवन वाला, परम शान्ति पावे
जग विच जीवे लोकां खातिर, जीवन मुक्त कहावे
सत्संग……

—०—

सत्संग महिमा

कोई चंगेया कर्मां वाला, नित सत्संग दे विच आंदा ऐ
ओह सदा सुखी हो जांदा, जेहड़ा राम नाम गुण गांदा ऐ

जिस घर होवे राम नाम, ओ घर स्वर्ग बन जांदा ऐ २
ओत्थे अमृत वर्षा होवे, हर जीव अमर हो जांदा ऐ
कोई……

अपनी मर्जी नाल न कोई सत्संग दे बिच आंदा ऐ २
होवन पिछले संस्कार ओई राम नाम गुण गांदा ऐ
ओह सदा……

घरां दे धन्धे बड़े जरूरी सारी दुनिया कहन्दी ऐ
हर दिन दुनिया धन्धेयां च रहन्दी कदे न वेली बहन्दी ऐ
इक दिन ऐसा आना, हर काम एत्थे रह जांदा ऐ
कोई……

सत्संग दे बिच हीरे मोती, हँस रूप चुग लहन्दे ने
सत्संग अमृत प्याला पीके, जीवन सफल वनांदे ने
ओह दोजख बिच न जांदा, जेहड़ा राम नाम गुण गांदा हे
कोई……

—०—

भजन

परदेसी हंसा जिन्दड़ी नूं रोग न ला
झूठे जग दी प्रीत है झूठी, किसे नाल करे न वफा

इस जग दे बिच कोई न तेरा
क्यों करदा ऐ मेरा मेरा
दिल विच राम बसा……

मानुष चोला सुन्दर मिलिया
माया दे बिच राम नूँ भुलेया
इस दम दा कोई न बसा……

तेरे अन्दर प्रीतम प्यारा
जगमग जोत होय उजियारा
अन्दर सुरत जगा……

जे तू अन्दर झांती मारे
सतचित आनन्द दर्शन पावे
जीवन सफल बना……

प्रीत दे कारण जगत रचावे
आप ही जीव ते ब्रह्म कहावे
प्रेम खेडन दा चाह……

—०—

भजन

वे तूं पढ़ गंगे रामा नगरी वोलदा सी कोन
एह मुसाफिर खाना, नगरी वोलदा सी कोन

की लैके तू आया जग ते, की जाना लैके
की खटेया ऐ मूर्ख वन्दे, तूं ऐसे जग विच रहके
हीरा जन्म गंवाया······नगरी······

मीटी कहन्दी कमैहार नूं तू गुन्दाँ ऐं मैनूं
इक दिन आयेगी बारी मेरी, मैं नाल मिलावांगी तैनूं
तेरी खाक बनावां······नगरी······

लकड़ी कहन्दी तरखान नूं, हुन तूं घड़ना ऐ मैनूं
इक दिन आयेगी बारी मेरी, मैं नाल मिलावांगी तैनूं
तेरा कोयला वनामां······नगरी······

चौं वन्देया दी पौड़ी बनाके, चड़ेयो काठ दी घोड़ी
तूं क्यों रोंदी ऐं पति वाली ऐ, जिन लाई ओहने तोड़ी
दुनिया लद्धी जानी सारी······नगरी······

दुनिया तेरी बाग-बगीचा, तू दुनियां दा वाली
कैइयां नूं फल भर-भर देना, ते कइयां नूं पता न डाली
तेरी कुदरत निराली······नगरी······

—०—

भजन

(तर्ज—तैनूं मेरी उम्र लग जावे)

क्यों नी नाम प्रभु दा ध्यावें नी दो दिन दी जिन्दड़ी
तेरी उम्र बीत दी जावे नी दो दिन दी जिन्दड़ी

एह जिन्दड़ी हौली करवा नालों
पावे पुछ लै विचार दिया अखां कोलो
एह ते हवा दे नाल उड़ जावे……

एह जिन्दड़ी जंगल दी लकड़ी ऐ
जिहनूं मेरी मेरी कहके पकड़ी ऐ
एह ते अग्ग दे नाल सड़ जावे……

एह जिन्दड़ी नदी दा पानी ऐ
कच्चे घड़े दी की जिन्दगानी ऐ
ऐहदा पता नी कद खुर जावे……

ऐ जिन्दड़ी सोने दी चिड़िया ऐ
बिना परां दे एहनूं फड़िया ऐ
'सुभाष' पर लगे उड़ जावे……

—०—

बाबा-पोत्रा

सानूं लोड़ न बाबा तेरे प्यार दी,
हुन तूं टिकट कटा ले हरिद्वार दी

कम्म काज ते हुन तूं करदा नहीं
ओत्थे बैठाके माला जपदा रहीं
हरकी पौड़ी तैनूं वाजा पैई मार दी
हुन……

दिने लाई फिरदां ऐं एवें बड़बड़ तूं
रात सौन दे देवें करदा खाऊँ २ तू
तैनूं समझ न ऐसे संसार दी
हुन……

ऐवें कर-कर गल्लां साडा सिर खां नां
ऐसे घर विच तेरे लई कोई थां नां
लड़े पोता नाले नूह भी ताने मार दी
हुन……

विन मतलिव किसे दी कोई सुनदा नां
सारा जग झूठा सच्चा इक प्रभु दा नां
'सुभाष' छड़ आस ऐस संसार दी
हुन……

—०—

भैन नानकी दा सनेहा

कोठे उत्तों उड कावां घेयो दी चूरी मैं पावां
आखी तैनूं याद करे, भैन तेरी फरियाद करें, हो
घर आजा नानकी दे वीरा···घर···

दस्स वीवी मैं कित्थे जावां, नां मेरे कोल है सरनामां
खौरे केहड़े देश गया, करके केहड़ा बेश गया
वे घर आजा मां पयो जाया···घर···

आखीं मेरे वीर नू तूँ जाके, भैन तेरी दो घड़ीया भी न जिन्दी
नां उठदी न वहन्दी आ, नां रात नू सौन्दी आ
ना कुछ खांदी पीन्दी आ, याद तेरी विच रोन्दी आ
घर आजा···

जंगल दे विच मंगल लौना, ओहने जा सन्तां विच वहनां
रंग मजीठी गुरु आं कोलो, नां है प्रभू दा लैना
वे घर आ नानका···कोठे उत्तो···

जिन्हा भैनां दे वीर न हुन्दे, ओहना भैनां ने दुःख किवे सहने
दिन दिहाड़े चेते आवन, पा-पा औसीयां काग उड़ावन हो
घर आजा···कोठे···

—o—

भेंट पंजाबी

दस्स शेरां वालीये कोई एहो जेहा थांह
जित्थे तेरा बैठ के मैं भजन करां

ओत्थे बेठां जिन्थे कोई शोर न होवे
तेरे वाझों दाती कोई होर न होवे
सुनां दे सुनावां अम्बे तेरा इक नां
जित्थे···

पंजां चौरां दाती मेरा घर लूटेया
मोह वाले जाल विच मैंनूं सुटेया
पञ्जा नाल मुकाविला मैं किस तरहां करां
जित्थे···

मैंनूं भी ठिकाना किते मिलना भी नां
अगर मिल गया ते ओथो हिलना भी नां
किहन्नी पावे धुप होवे किन्नी पावे शां
जित्थे···

तेरे जेहा माये कोई मिलना भी नां
मैं तेरा वच्ड़ा ते तू मेरी मां
मेरे सिर उत्ते तेरा हत्थ होवे मां
पत्थे···

—०—

भेंट

मेरे नाल काहनूं रूस्से शेरां वाली माऐ
दस्सं हाँ मैं केहड़े तेरे छत्र चुराये

लड़-लड़के मैं अज तेरे कोलों पुच्छनां
तैत्थों की लुकेयां ऐ तैनूं की दसनां
ऐडे पैड़े भाग माये क्यो तू बनाये

तेरा दर छड़ होर किस दर जावां
किस नूं मैं दिल वाला हाल सुनावां
तुझ विन कोन मेरा दर्द वण्डाये

होरनां नूं वण्डी जावे सुखा दे खजाने
सानू तरसाये माये समझ वेगाने
दुनिया दे दुःख माये मेरी झोली पाये

तेरे विना माये मेरा कोइ नईयो दर्दी
जो मिलिया अम्बे, सोइ खुद गर्जी
महामाया तेरी माया समझ न आये

—०—

भेट डोगरी

पैल्ले मईया गी पोग लोपाई जाय ओ
फेर तुस पगतो टुरी जाय ओ

हत्था साडे विच गंगा जल पानी
भईया गी सनान कराइ जाय औ
फेर...

हत्था साडे च पञ्ज रंग चोला
माईया दे अंग लोपाई जाय ओ...

हत्था साडे च केसर कटोरी
मईया गी तिलक लोयाइ जाय ओ

हत्था साडे च हार फुल्ले दे
मईयां गी पुष्प चड़ाई जाय ओ

हत्था साडे च (धूप) अग्रवत्तियां
मईया गी धूप तखाइ जाय ओ

हत्था साड़े च ध्वजा नारियल
मईया दे चरणे लाइ जाय ओ

हत्था साडे च लोंग ईलाचिया (मिश्री मेवा)
मईया गी पोग लोयाई जाय ओ

—०—

भजन

मैं फड़या गुरु जी दा पल्ला, प्रभु जी दा प्याला
ते मल्ले मल्ले हल्ला गै मची गया

नाम दा गहना मी मनै च पाया
दुनिया च रैई चित प्रभु कन्नै लाया
लग्गी गेया रोग अवल्ला, मैं आखा अल्ला
के नशा मीकी नाम दा चड़ी गेया

प्रभु मिलने दा आऊँ राह तुकी दसना
कर्म उपासना दा रस पैल्ले चखना
ओई जाना ज्ञान सखाला, नई वन मता चल्ला
फी डर केडी गल्लै दा लग्गी गया

कर सत्संग छोड़ चूठा दे व्यापार गी
कीआ मुह दसगा सच्ची सरकार गी
चार दिने दा जग मेला, ऐ मिलने दा वेला
की चूठी मोह माया च फसी गेया

वेला गोआई तू बड़ा पछताना
शास्त्री दी मन्न गल्ल जे तू सुख पाना
ऐंदे नी च कोई चमेला, नेई कर तेला तेला
प्रभु सब थारह च वस्सी गेया

—o—

भजन

जिन्न राम रत्न धन पाया, उन्नै जीवन सफल बनाया
तुसी भी करी लैओ राम कन्ने प्यार, नेई तां जीना है बेकार
जीना है बेकार नई तां.........

कर लै नेक कमाई बन्दे जप प्रभु दा नां
सौखै वेलै तेरे सारे साथी, औखै कोई नां
ओ साथी तेरा दुखै सुखै दा, उन्नै लाना तुकी पार
नेई तां रौगा विच मझदार, नई ता जीना.........
जीना.........

अन्दर वार तेरे राम गै वस्दा कर ऐदी पन्छान
ब्रह्म सच ते सब जग मिथ्यिा ऐ गुरु ऐ दा ज्ञान
ऊऐ अल्ला, ऊयै मसीहा, ऊयै सत करतार
ऊयै जग दा पालनहार......नेई तां......
जीना.........

लैर लुप्पै पानी गी ते कपड़ा तुप्पै सूत
जीव तुपदा राम गीते त्रये उत दे उत
अपने मनां गी पलटीये दिखो ओई जाना बेड़ा तेरा पार
विन्द जोड़ मना दी तार......नेई तां......
जीना...........

—०—

गायत्री मन्त्र कीर्तन

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य
धीमहि धियो योनः प्रचोदयात् ॥

मन्त्र गायत्री श्रेष्ठ महान्, करे सब जीवों का कल्याण
मन्त्र············

ॐ नाम परमात्मा, भूः है सबका प्राण।
भुवः नाश दुःख का करे ऐसा निश्चय जान।
ज्ञान बल बढ़ता रहे महान······करे······॥

स्वः अमृतमय रूप है, तत् संकेत बताय।
सवितुः तेज प्रकाश है, वरेण्यं श्रेष्ठ कहाय।
यही है मानवता की शान······करे······॥

भर्गो अघ क्षय करत है, देवस्य दिव्य प्रकाश।
धीमहि धारणा ठीक कर, धियो सुबुद्धि विकास।
दूर होता तन का अभिमान······करे······॥

योनः अपने आप में, प्रेरित प्रचोदयात्।
यज्ञ प्रभु तो पिता है, है गायत्री मात्।
सुखी रहता जो धरता ध्यान······करे······॥

अर्थ सहित यामो जपे, भवबन्धन कट जात।
बिना अर्थ हू जो जपे, पाप ताप मिट जात।
अलगरज हो आतम पहिचान······करे······॥

—०—

भजन

मेरी नैया में लक्षमण राम, गंगा मैया धीरे बहो
धीरे बहो मैया धीरे बहो, मेरी...............।

कौन की नईया, कौन की गंगा
कौन के लक्षमण राम............।

केवट की नैया, भगीरथ की गंगा
राजा दशरथ लक्षमण राम......।

काहे आइ नैया, काहे आई गंगा
काहे आये लक्षमण राम.........।

पार करे नैया, पाप हरे गंगा
प्यारे भक्तो के लक्षमण राम......।

—o—

कीर्तन

श्री राधे गोपाल, भज मन श्री राधे।
श्याम राधे, घनश्याम राधे, बोल श्री···

राधे राधे, श्याम मिला दे
गोविन्दा राधे, राधे राधे
प्रेम से बोलो, राधे राधे
राधे राधे, श्याम मिला दे ।।

वसुदेव देवकी का पुत्र कहावे,
नन्द यशोदा को लीला दिखावे
गोपियों के प्यारे नन्दलाल
भज मन श्री·········

जब जब भीड़ बनी भक्तों पर
तब तब लिया अवतार जहाँ पर
धर्म बचावे नन्दलाल·········
भज मन·········

यमुना तट पर गऊएँ चरावें
वृन्दावन में बंसी बजावे
रास रचावें नन्दलाल······
भज मन·········

—०—

भजन

सीताराम बोल राधेश्याम बोल ।
सतनाम बोल वाहे गुरु बोल ।।
सुमिरण बिन गोते खाओगे ।
हरि नाम बिना पछताओगे ।।
सुमिरन बिन………

क्या लेकर तुम आये जगत में
क्या लेकर तुम जाओगे
सुमिरण……

कागज की है वन्दे नाव पुरानी
बूँद पड़ी मिट जाओगे
सुमिरण……

समय मिला है बन्दे करले बन्दगी
अन्त समय पछताओगे
सुमिरण……

कहत कबीर सुनो भइ साधो
भव सागर तर जाओगे
सुमिरण……

—०—

भजन

(तर्ज—जिन्दगी की न टूटे लड़ी)

तेरे साँसों की कीमत बड़ी, नाम जप ले घड़ी दो घड़ी
मरने वाला उमरिया को जाने, होती है भयानक बड़ी
मौत की आखरी वो घड़ी······तेरे·········

फल पक जाता है जिस वक्त, टहनी से वो कट जाता है
पूरी हो जाती है जब उम्र वन्दा भी तो उठ जाता है
साँस निकलेगी मुश्किल बड़ी······नाम······

आजकल २ न तू कर, खत्म हो न जाय ये सफर
मोह ममता के काँटों को तोड़ वक्त थोड़ा है बातें न कर
अब तो मौत सिरहाने खड़ी······नाम······

अन्तकाल तू पछतायेगा, समय हाथ न फिर आयेगा
मुँह से निकले न शब्द कोई, मौत का झोका जब आयेगा
फिर हो जायगा तू बरी······नाम········

रिश्ते नाते रहे देखते फिर भी उड़ पंछी कहाँ
मरने वाला चला जाता है, चाहे रोके ये सारा जहाँ
रह जाती है याद उसकी······नाम·········

—०—

कीर्तन

ॐ नमः शिवाय ।

श्री राम जय राम जय जय राम ।
श्री राम जय राम जय जय राम ।।

हरे राम हरे राम, राम राम हरे ।
हरे कृष्ण हरे कृष्ण, कृष्ण कृष्ण हरे हरे ।।
श्री कृष्ण गोविन्द हरे मुरारी, ऐ नाथ नारायण वासुदेव ।।

गोविन्द हरे गोपाल हरे ।
जै जै प्रभु दीनदयाल हरे ।।
मैं गिरधर दी गिरधर मेरे ।।

गोविन्द जै जै गोपाल जय जय ।
राधा रमण हरि गोविन्द जय जय ।।

श्री राधे गोपाल भज मन श्री राधे ।
श्री राधे गोपाल भज मन श्री राधे ।।

श्री नारायण हरि नारायण नारायण हरि जय जय ।
जय नारायण हरि नारायण नारायण हरि जय जय ।।

—०—

मुद्रक : दुर्गा मुद्रणालय, सुभाषपार्क एक्सटेंशन, शाहदरा, दिल्ली-३२





श्री सुभाष शर्मा शास्त्री जी महाराज़

जीवन की सफलता, मन की शान्ति,

दुखों की निवृत्ति एवं परमानन्द

की प्राप्ति का मात्र उपाय है

आत्म साक्षात्कार ।